

डॉ. डेविड टर्नर, गॉस्पेल ऑफ़ जॉन, सत्र 7, जॉन 5

© 2024 डेविड टर्नर और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेविड टर्नर और जॉन के सुसमाचार पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 7 है, विवाद, यीशु की यरूशलेम की दूसरी यात्रा। यूहन्ना 5:1-47.

नमस्ते, मैं डेविड टर्नर हूँ। हम यहां जॉन का एक और वीडियो बना रहे हैं। यह जॉन अध्याय पांच पर है, और जॉन पांच मुझे लगता है कि जॉन के सुसमाचार में बड़ा दिखता है क्योंकि यह उन मुद्दों को स्थापित करता है जो यरूशलेम से यीशु के लिए वापस आते रहते हैं।

तो, यह वह अध्याय है जहां हम यीशु को सब्त के दिन बेथेस्डा के तालाब में लंगड़े आदमी को ठीक करते हुए देखेंगे। जैसा कि कथा में कहा गया है, लंगड़ा आदमी फरीसियों के सामने यीशु को डांटने लगता है और कुछ हद तक एक असहानुभूतिपूर्ण चरित्र बन जाता है। जब हम बाद में जॉन अध्याय नौ में अध्ययन करेंगे तो हम देखेंगे कि जिस व्यक्ति को यीशु ने ठीक किया वह एक अधिक सहानुभूतिपूर्ण चरित्र है और एक अर्थ में फरीसियों के खिलाफ यीशु का पक्ष लेता है, जबकि यहां जॉन अध्याय पांच में यह चरित्र एक ऐसा व्यक्ति बन जाता है जो अधिक संरेखित है फरीसियों के साथ क्योंकि वह उन्हें यीशु पर गिराने की प्रवृत्ति रखता है।

और जब यीशु उससे बात करते हैं, तो यीशु उससे कहते हैं कि वह अब और पाप न करे, उसकी स्थिति की तुलना अध्याय नौ में उस अंधे आदमी से करें, जिसके बारे में कहा जाता है कि वह बिना किसी कारण के बीमार था, सिवाय भगवान की महिमा करने के, और उसके पास करने के लिए कुछ भी नहीं था। पाप के साथ. तो आपके दिमाग में बस एक छोटा सा टीजर है जो यहां जो कुछ होता है उसकी तुलना जॉन अध्याय नौ में क्या होता है, से करता है, लेकिन आइए इसमें शामिल हों और देखें कि कैसे यीशु की खुद के लिए गवाही मूसा और जॉन बैपटिस्ट की गवाही से संवर्धित होती है और उनके कार्यों और कार्यों के माध्यम से स्वयं पिता के बारे में और कैसे येरूशलम में यीशु और धार्मिक नेताओं के बीच संघर्ष का जिक्र किया गया है, जो उन विषयों को सामने लाता है जो पुस्तक के अंत तक जारी रहेंगे। इसलिए हम सबसे पहले यह देखते हैं कि कथा के प्रति हमारी आदत क्या रही है और यह अध्याय पाँच में एक साथ कैसे प्रवाहित होती है।

और इसलिए, यीशु ने यरूशलेम की अपनी दूसरी यात्रा शुरू कर दी है। हमने उसे आखिरी बार उत्तर की ओर गलील के काना में देखा था। तो, वह तालाब पर लकवाग्रस्त आदमी को ठीक कर रहा है।

यहां पाठ्य संबंधी समस्या के कारण हमने पाठ्य आलोचना पर अपने दूसरे वीडियो में इस घटना का थोड़ा उल्लेख किया है। तो शायद आपको उसमें से कुछ विवरण याद होंगे। कुंड में एक व्यक्ति को जटिल परिस्थितियों से ठीक करने के बाद, यीशु और फरीसियों के बीच विवाद पैदा हो जाता है।

और उनके पास जो मुद्दे हैं वे सबसे पहले यह हैं कि यीशु ने सब्त के दिन इस आदमी को ठीक किया है। और मुझे लगता है कि उनके विचार में उसने इस आदमी को सब्त का दिन तोड़ने के लिए प्रेरित किया है क्योंकि उसने उससे पूछा, उससे कहा कि उठो और यदि तुम चाहो तो अपना बिस्तर अपने साथ ले जाओ। उसका बिस्तर निश्चित रूप से ऐसा कुछ नहीं था जिसके बारे में हम सोचते हैं कि इसे सिरता द्वारा बनाया गया था, बल्कि यह सिर्फ पुआल के गद्दे या बस एक लुढ़का हुआ स्लीपिंग बैग की तरह की व्यवस्था थी।

निश्चित रूप से बिस्तर जैसी कोई बड़ी चीज़ नहीं। तो, यीशु उससे कह रहे थे कि बस चले जाओ, अपना सामान अपने साथ ले जाओ, अपना बिस्तर, यदि तुम चाहो तो, अपना बस्ता, जो भी हो। और इसका उपयोग फरीसियों द्वारा किया गया था क्योंकि यीशु ने उसे सब्त के दिन काम करने के लिए कहा था।

इसके जवाब में, यीशु ने न केवल सब्त के दिन काम करने के लिए माफी नहीं मांगी, बल्कि उन्होंने कहा कि उनके पिता ने भी सब्त के दिन काम किया था। तो निश्चित रूप से, आप जानते हैं, इसे धार्मिक नेताओं द्वारा समस्या को बढ़ाने के रूप में देखा गया था। और इसलिए यीशु को खुद को ईश्वर के बराबर बनाने के रूप में देखा गया, उम्मीद है कि अब पाठक के दृष्टिकोण से, साहित्यिक विद्वान सर्वज्ञ कथावाचक के बारे में बात करेंगे।

कथावाचक के दृष्टिकोण से, यीशु वास्तव में ईश्वर के तुल्य थे। हालाँकि, यह कुछ ऐसा नहीं था जिसे धार्मिक नेता स्वीकार करने वाले थे। इसलिए, चीजें बद से बदतर होती चली जाती हैं, न केवल सब्त के दिन उपचार करना बल्कि खुद को भगवान के बराबर बनाना।

तो, आपके पास श्लोक 18 के माध्यम से वह विवादास्पद घटना है जो मुझे लगता है कि आप शेष अध्याय में एक प्रवचन कह सकते हैं, यीशु की एक शिक्षा जो उस विवाद से उत्पन्न होती है जहां वह अपने मंत्रालय का बचाव करता है और बोलता है वह स्वयं केवल पिता के लिए बोल रहा है, पिता ने उसे जो करने और कहने को दिया है उससे आगे नहीं जा रहा है। इसलिए यदि वह कह रहा है, यदि तुम्हें मुझसे कोई समस्या है, तो तुम्हें मेरे पिता से भी समस्या है, और फिर यह अध्याय का एक खंड शुरू होता है जहां वह स्वयं के लिए गवाही देने के बारे में बोलता है। और वे निस्संदेह कहेंगे कि आप स्वयं गवाही नहीं दे सकते, लेकिन अन्य गवाह भी हैं।

तो, इस खंड में हमारे पास मूल रूप से यीशु के पांच गवाह हैं, न केवल स्वयं यीशु, बल्कि वह फिर से जॉन द बैपटिस्ट की गवाही की ओर इशारा करता है, कार्य, वह संकेत होंगे जो वह कर रहा है, कार्य। वे उसके माध्यम से पिता के कार्य हैं। तो, पिता कार्यों के माध्यम से यीशु की गवाही दे रहा है।

और अंततः, मुझे लगता है कि यहां यीशु का सबसे महत्वपूर्ण गवाह मूसा है क्योंकि समस्या मूलतः इसी के बारे में है। यीशु पर सब्बाथ तोड़ने और मूसा की अवज्ञा करने का आरोप लगाया जा रहा है। और यदि यीशु ने ऐसा किया है, तो सभी दांव बंद हो गए, चर्चा समाप्त हो गई।

यीशु अपने मंत्रालय के उस चरित्र-चित्रण को स्वीकार नहीं करते। वह कहता है कि तुम ही वह लोग हो जो मूसा को नहीं समझते। मैं जो कर रहा हूं वह पूरी तरह से मूसा के अनुरूप है।

और यदि तू ने मूसा पर विश्वास किया होता, और उसे ठीक से समझा होता, तो मुझ पर भी विश्वास कर लिया होता। तो जैसा कि पुरानी कहावत है, यह वास्तव में यहाँ अध्याय पाँच में प्रशंसक को प्रभावित करता है। और जिन मुद्दों पर यहां चर्चा की जा रही है वे निश्चित रूप से पुस्तक में यीशु और शिष्यों के बीच विवाद में मौलिक मुद्दे हैं।

तो, हम यहां विचार के प्रवाह के इस संक्षिप्त अवलोकन से कुछ भौगोलिक पृष्ठभूमि और क्या हो रहा है, की ओर मुड़ते हैं। निःसंदेह, यह यरूशलेम में चल रहा है, और यह संभवतः बेथेस्टा के पूल में चल रहा है, जो जितना हम बता सकते हैं टेम्पल माउंट के उत्तर में है। और बेथेस्टा का यह पूल जाहिर तौर पर काफी बड़ा था, इसमें पांच बरामदे थे, जाहिर तौर पर चार तरफ थे और एक बीच में था।

पूल के खंडहरों का पुरातत्वविदों और जेरूसलम मॉडल द्वारा अध्ययन किया गया है जिसे आप देख पाएंगे यदि आप यरूशलेम जाते हैं तो एक पर्यटक इसे इस तरह से चित्रित करता है। टेम्पल माउंट के उत्तर में स्थित, यह दृश्य कुछ हद तक दक्षिण की ओर है, शायद थोड़ा सा दक्षिण-पश्चिम की ओर, किला एंटोनिया टेम्पल माउंट के उत्तर-पश्चिमी कोने पर स्थित है। यह टेम्पल माउंट में सबसे पवित्र स्थान होगा, ताकि आप परिप्रेक्ष्य देख सकें।

इस पर एक और कोण है जिसमें पूल की ओर आने-जाने वाले विभिन्न रास्ते हैं। पूल का उपयोग शायद बलि की दावतों के लिए जानवरों को धोने के लिए किया जाता था, लेकिन जाहिर तौर पर इसका उपयोग मिकवे, अनुष्ठान शुद्धता के यहूदी पूल के रूप में भी किया जाता था। तो, हमें यह आभास होता है कि यह काफी अद्भुत इंस्टालेशन है।

इसलिए, अगर हम आज यरूशलेम का दौरा करते हैं और सेंट ऐनी चर्च के पास इस साइट पर जाते हैं, तो हमें निराशा होगी, जहां हम पुरातात्विक स्तर और इस साइट पर बने विभिन्न प्रतिष्ठानों, बीजान्टिन चर्चों और इस पर वास्तविक समझ के बिना हैं। और यह कि, हमारे पास यह समझने की कोई वास्तविक क्षमता नहीं है कि मूल कैसा दिखता था। जिन लोगों ने इसकी खुदाई की है और समझते हैं कि वे क्या कर रहे हैं, उन्होंने मॉडल बनाने वाले लोगों को अंतर्दृष्टि दी है, और इसलिए मॉडल एक अच्छा शिक्षित अनुमान है कि यह कैसा दिखता होगा। दुर्भाग्य से, जब हम वहां जाते हैं, तो हम वास्तव में उस साइट से बहुत कुछ प्राप्त नहीं कर पाते हैं।

लेकिन अगर आप जाएं तो सेंट ऐनी चर्च में जाकर गाना न भूलें, क्योंकि वहां की ध्वनिकी अद्भुत है। इसलिए, अब हम जॉन 5 में कुछ चयनित मुद्दों की ओर मुड़ते हैं जो तब विकसित होते हैं जब हम परिच्छेद को उसके संदर्भ में देखते हैं और वहां विचार के प्रवाह का सर्वेक्षण करते हैं। यूहन्ना अध्याय 5, श्लोक 1 की शुरुआत में हमें बताया गया है कि यीशु यहूदी त्योहारों में से एक के लिए यरूशलेम गए थे।

वास्तव में त्योहार का नाम नहीं है, और जो बहस सामने आती है वह किसी त्योहार के बारे में नहीं है, बल्कि इसका संबंध सब्बाथ से है। जिन लोगों ने जॉन का ध्यानपूर्वक अध्ययन किया है, उन्हें

एहसास हुआ कि जॉन में यहूदी त्योहारों के बारे में बहुत कुछ चल रहा है। वास्तव में, जॉन अध्याय 5 से 10 में आमतौर पर त्योहार चक्र शब्द का उपयोग किया जाता है।

तो, इस तरह से यह चल रहा है। तो आइए एक पल के लिए सर्वेक्षण करें कि ये त्योहार जॉन के सुसमाचार में कैसे काम करते हैं। यहाँ अध्याय 5 में, बहस सब्त के दिन पर है।

बेशक, हमारे पास निर्गमन अध्याय 20, व्यवस्थाविवरण और पूरे पुराने नियम में सब्बाथ के बारे में व्यापक शिक्षा है। यह मुद्दों में से एक था, उन क्षेत्रों में से एक जहाँ मिश्रा, रब्बी शिक्षाओं का सबसे पहला संहिताकरण, सब्बाथ के बारे में कहने के लिए बहुत कुछ था, सब्बाथ कैसे रखें, सब्बाथ कैसे न रखें, वैध सब्बाथ क्या होता है, सब्त के दिन का उल्लंघन क्या है? यहाँ उन प्रमुख क्षेत्रों में से एक है जिसके बारे में यीशु फरीसियों से असहमत थे।

हमने इसके बारे में जॉन में बाद में अध्याय 7 और अध्याय 9 में पढ़ा। हम यहाँ जॉन 5 के साथ-साथ जॉन 9 पर भी प्रकाश डालते हैं, क्योंकि कहानियां दिलचस्प रूप से समान हैं, फिर भी अलग हैं, और तुलना करने और विरोधाभास करने में मजेदार हैं। हमारे अगले अध्याय, अध्याय 6 में, फसह और फसह पर्व के बारे में बहुत कुछ चल रहा है, और यही कारण है कि यीशु यरूशलेम गए। हम जॉन में एक से अधिक अवसरों पर फसह का संदर्भ पाते हैं।

हम जॉन में यीशु की यरूशलेम की तीन अलग-अलग फसह यात्राओं को पाते हैं। यही कारण है कि अधिकांश लोगों की राय है कि गॉस्पेल यीशु को तीन साल की सेवकाई के रूप में चित्रित करते हैं, डेटा जो हम जॉन के गॉस्पेल से प्राप्त करते हैं। यह दिलचस्प है कि जॉन, वह सुसमाचार जिसकी ऐतिहासिकता विद्वानों द्वारा सबसे अधिक संदेह में है, वह पुस्तक है जो उन विद्वानों को यह समझ देती है जो यह कह रहे हैं कि यीशु का मंत्रालय लगभग तीन वर्षों तक चला।

हमने फसह के बारे में और इसे कैसे किया जाना चाहिए, इसके बारे में मूल रूप से निर्गमन की पुस्तक में, साथ ही व्यवस्थाविवरण अध्याय 16, और नए नियम के कई अन्य ग्रंथों में पढ़ा है। बूथ या तम्बू जॉन अध्याय 7 में मुद्दा है और वास्तव में जॉन 8 तक जाता है। मुझे लगता है कि हम अभी भी, यहूदी लोगों के साथ यीशु की असहमति से उनकी मूल यात्रा के आधार पर निपट रहे हैं, जो अध्याय 7 में शुरू होती है। अध्याय 9 का रास्ता। यहाँ तक कि अध्याय 10 का पहला भाग, गुड शेफर्ड प्रवचन, मुझे लगता है कि वास्तव में जो कुछ चल रहा था उससे बह रहा है जब वह पहली बार जॉन अध्याय 7 और पद 1 में आया था। तो, झोपड़ियों का पर्व, जैसा कि इसे कभी-कभी कहा जाता है, शायद इसके लिए एक बेहतर शब्द बूथ है क्योंकि, हमारी पश्चिमी भाषा में, तंबू संगमरमर की सजावट के साथ पत्थर से बनी एक बड़ी इमारत है। शायद तम्बू एक बहुत ही पवित्र, विशाल इमारत है, जबकि, पवित्रशास्त्र में, मंदिर के निर्माण से पहले तम्बू भगवान की पोर्टेबल उपस्थिति होगी।

झोपड़ियों या बूथों की दावत, हिब्रू शब्द सुकोट, मूल रूप से फसल का जश्न मनाने वाला और लोगों को जंगल में भटकने की याद दिलाने वाला त्योहार है, मुझे लगता है, एक ही समय में, एक शरद ऋतु त्योहार जहाँ यहूदी लोग बाहर रहते थे। हमारे पास सुकोट की पृष्ठभूमि के बारे में कहने के लिए और भी बहुत कुछ होगा, खासकर जब हम जॉन अध्याय 7 पर आते हैं। अध्याय 10

के मध्य में, समर्पण के पर्व का संदर्भ है, समर्पण वह पर्व है जहां मंदिर को फिर से समर्पित किया गया था 160 ईसा पूर्व के मध्य में सेल्यूसिड शासक एंटीओकस एपिफेन्स द्वारा इसे अपवित्र कर दिया गया था। जाहिर है, यह कोई दावत नहीं है, जिसके बारे में पुराने नियम में सीधे तौर पर बात की गई है, इसलिए इसके बारे में जानकारी पाने के लिए हमें 1 मैकाबीज़ अध्याय 1 को देखना होगा।

तो, यह उत्सव और मंदिर के समर्पण का समय था, और जॉन अध्याय 10 में इसके बारे में संक्षेप में बताया गया है, इसके बारे में बहुत कुछ नहीं। अंत में, पेंटेकोस्ट का पर्व है। स्पष्ट रूप से, जॉन 10 में इसका पूरा उल्लेख नहीं किया गया है, लेकिन ल्यूक-एक्ट्स के लिए इसका महत्व है और जिस तरह से ल्यूक विशेष रूप से एक्ट्स की पुस्तक की संरचना कर रहा है।

मुझे लगता है, हम मूल रूप से आपको इस विचार से चिढ़ा सकते हैं कि जॉन में पेंटेकोस्ट का उल्लेख नहीं किया गया है, और इससे हमें अध्याय 20 में यीशु द्वारा शिष्यों को सांस लेने, हाथ रखने के तरीके से आत्मा वितरित करने के तरीके के बारे में कुछ समस्याएं मिलती हैं। उन पर, और कहा, आत्मा प्राप्त करो। हमें इसके बारे में बाद में और अधिक कहना होगा जब हम अध्याय 20 पर पहुंचेंगे, कि यीशु वहां क्या कर रहे थे, क्या हमारे पास जॉन 20 और अधिनियम अध्याय 2 और बाकी पर्यायवाची परंपरा के बीच एक ऐतिहासिक विरोधाभास है। उस पर और बाद में।

यह सब कहने का तात्पर्य यह है कि पुराने नियम के पर्वों की गहरी समझ रखने से हमें यह समझने में मदद मिलती है कि जॉन यहाँ हमें क्या बता रहा है जब हम जॉन अध्याय 5 को देखना शुरू करते हैं, वास्तव में जॉन अध्याय 10 के माध्यम से, और अंततः जब यीशु अध्याय 12 में फसह के समय यरूशलेम आते हैं। जॉन अध्याय 5 में, एक बात जो मुझे लगता है, पिता के साथ संबंध और वह अपने मंत्रालय की पहचान कैसे करते हैं, वह किसी भी अन्य चीज़ से अधिक है, वह यह है कि वह अपने आप को कैसे चित्रित करते हैं पिता के साथ संबंध। इसलिए, जब यीशु इसी अभिव्यक्ति का उपयोग करते हैं, तो मेरे पिता, उनके दर्शकों ने इसे अपने अपमान के रूप में देखा।

जाहिर तौर पर, उन्होंने सोचा कि उन्हें पिता से बात करने का कोई अधिकार नहीं है क्योंकि इससे उन पर कोई विशेष प्रभाव पड़ता है, और उन्होंने सोचा कि भगवान के साथ उनका रिश्ता भी उनके जैसा ही अच्छा था। इसलिए, जब हम देखते हैं कि अध्याय 5, श्लोक 17 से इस वाक्यांशविज्ञान का उपयोग कैसे किया जाता है, तो हमें एक समझ मिलती है, मुझे लगता है, जॉन प्रस्तावना में किस बारे में बात कर रहा था जब उसने बताया कि यीशु कैसे पिता का एजेंट था। शब्द देहधारी हुआ, हमारे बीच में वास किया, हमने उसकी महिमा देखी, और अध्याय 1, श्लोक 18 में वह शानदार कथन देखा कि कैसे यीशु ही वह है जो पिता के पक्ष में है या पिता के आलिंगन में है, पिता की गोद में है, अगर आप करें तो।

तो, हम विशेष रूप से यहां जॉन अध्याय 5, श्लोक 17 में देखना शुरू करते हैं, क्योंकि श्लोक 16 के अनुसार, यहूदी नेताओं द्वारा यीशु का सामना किया जा रहा है, और वे कुछ अर्थों में, दूसरे शब्दों में, उसे सता रहे हैं क्योंकि उसने वही किया जो उसने किया था। सब्त के दिन. अंतः यीशु ने अपने बचाव में उन से कहा, मेरा पिता आज के दिन तक सदैव अपने काम में लगा रहता है, और

मैं भी काम में लगा हूँ। तो, यीशु के लिए यह काफी आश्चर्यजनक बयान था, न केवल यह पुष्टि करने के लिए कि पिता काम पर हैं बल्कि यह कहने के लिए भी कि मैं उनके साथ काम कर रहा हूँ।

इसलिए, यीशु ने न केवल उनके मन में यह पुष्टि करके खुद पर बहुत अधिक दबाव डाला कि उनके और पिता के बीच यह सहयोगात्मक संबंध है, बल्कि जिस तरह से उन्होंने सब्त के दिन काम करने की बात की वह भी एक समस्या थी। तो, पद 18 कहता है, इस कारण से, उन्होंने उसे मारने की और भी अधिक कोशिश की, और भी अधिक उसे मारने की कोशिश की, न केवल इसलिए कि वह सब्त का उल्लंघन कर रहा था, बल्कि इसलिए कि वह परमेश्वर को अपना पिता कह रहा था, और खुद को परमेश्वर के बराबर बना रहा था। इसलिए हममें से जिन लोगों को प्रस्तावना के प्रकाश में, और प्रस्तावना और इस अध्याय के बीच घटित अन्य चीजों के प्रकाश में इस अंश को पढ़ने का लाभ मिला है, वे ईश्वर के साथ यीशु के विशेष संबंध के बारे में पूरी तरह से जानते हैं।

आरंभ में, शब्द था, शब्द ईश्वर के साथ था, और शब्द वास्तव में स्वयं ईश्वर था। तो, शायद, हमारे मन में कोई आश्चर्य नहीं है कि यीशु इस तरह की आश्चर्यजनक बात कहेंगे। हालाँकि, उनके दर्शकों को इससे कई कठिनाइयाँ होती हैं।

तो, वह उन्हें यह बताने के लिए आगे बढ़ता है कि वह और उसके पिता यहां कैसे काम कर रहे हैं और एक विषय में शामिल हो जाते हैं जिसे आप बाद में जॉन अध्याय 6, जॉन 8, और जॉन 10, और जॉन 15 तक विकसित कर सकते हैं। और अंत में और यहाँ तक कि जॉन अध्याय 20 में भी। तो यहाँ लब्बोलुआब यह है कि, पिता के एजेंट के रूप में, शायद किसी व्यक्ति के शालियाच के बारे में रब्बी की शिक्षा, एक व्यक्ति का एजेंट और पाप करने वाले व्यक्ति के समान ही, इसके लिए भी प्रासंगिक है। इसलिए यीशु अनिवार्य रूप से पुष्टि करते हैं कि जैसे-जैसे वह आगे बढ़ते हैं, वह इसे बनाने के लिए बाहर नहीं जाते हैं।

वह बस वही कर रहा है जो पिता ने उसे करने के लिए प्रेरित किया है, मूलतः पवित्र आत्मा द्वारा। मैं तुम से सच कहता हूँ, श्लोक 19, पुत्र स्वयं कुछ नहीं कर सकता। वह वही कर सकता है जो वह अपने पिता को करते हुए देखता है क्योंकि जो पिता करता है वही पुत्र भी करता है।

तो इस शिक्षण के बीच में, वह मृतकों को जीवित करने की भी बात करता है, और हम कुछ युगांतशास्त्र में पहुँच जाते हैं जो यहाँ भी काफी दिलचस्प है। एक क्षण में उसके बारे में बात करें। इसलिए यीशु कहते हैं कि उन्हें आदर दिया जाना चाहिए, श्लोक 23, उसी तरह जैसे पिता का आदर किया जाता है।

पिता ने सारा न्याय पुत्र को सौंप दिया है ताकि हर कोई पुत्र का आदर उसी प्रकार कर सके जैसे वे पिता का आदर करते हैं। जो कोई पुत्र का आदर नहीं करता वह उस पिता का आदर नहीं करता जिसने उसे भेजा। तो, यह उन लोगों की नज़र में यीशु की स्थिति को ऊपर उठाता है जो उसे बात करते हुए सुन रहे हैं, और ये उन लोगों के लिए लड़ने वाले शब्द हैं जो वास्तव में अभी तक यीशु पर विश्वास नहीं करते हैं या उनमें विश्वास करने के लिए तैयार नहीं हैं।

और इसे श्लोक 31 में उठाया जाएगा और यीशु की गवाहियों के बारे में बताया जाएगा, और ये कैसे दिखाते हैं कि वह वास्तव में वही है जो पिता ने उसके होने का दावा किया है। इसलिए, यीशु अपनी पहल पर कुछ नहीं करते। शायद हमें यहां एक क्षण रुकना चाहिए और इस जानकारी को उस तरीके पर लागू करना चाहिए जिस तरह से व्यवस्थित धर्मशास्त्री यीशु और केनोसिस के सिद्धांत और इन सभी प्रकार की चीजों के बारे में बात करते हैं।

मसीह के दो स्वभावों का सिद्धांत। मैंने कुछ धर्मशास्त्रियों को कुछ ऐसे बयान देते हुए सुना है जो मुझे बहुत संदेहास्पद लगते हैं। जब वे ऐसा करने के लिए यीशु के अपने मानवीय स्वभाव में कार्य करने, या ऐसा करने के लिए अपने दिव्य स्वभाव में कार्य करने के बारे में बात करते हैं।

और हम कभी-कभी लोगों को इस तरह की भाषा का उपयोग करते हुए सुनते हैं, जब यीशु कोई चमत्कार करता है तो वह अपने दिव्य स्वभाव में कार्य कर रहा होता है, और जब वह अन्य चीजें कर रहा होता है तो वह अपने मानवीय स्वभाव में कार्य कर रहा होता है। मुझे यह कहना होगा कि यह मुझे बहुत अजीब लगता है, क्योंकि यह जॉन अध्याय 5 और पवित्रशास्त्र के अन्य ग्रंथों से स्पष्ट है, कि यीशु जो कुछ भी करता है उसका श्रेय पिता को देता है। इसलिए, मुझे लगता है कि हमें यहां ईमानदार होना होगा और यीशु के शब्दों को मानना होगा कि एक इंसान के रूप में, यीशु स्वाभाविक रूप से काम नहीं कर रहे हैं क्योंकि वह सड़क के एक तरफ दिव्य अभिनय करते हैं और फिर सड़क के दूसरी तरफ मानवीय व्यवहार करते हैं।

यीशु कहते हैं कि ऐसा कुछ भी नहीं है जो वह करते हैं और उनमें पिता का कार्य नहीं है। जाहिर तौर पर, यीशु पिता के कार्य करने में सक्षम है क्योंकि पिता पुत्र को बिना मापे आत्मा देता है। जॉन द बैपटिस्ट ने निश्चित रूप से हमें अध्याय 1 में बताया कि ईश्वर का मेम्रा वह है जिस पर आत्मा उतरता है और रहता है।

तो, यह मेरे लिए स्पष्ट है कि जब हम यीशु के बारे में पढ़ते हैं कि वह अपने सभी कार्यों का श्रेय पिता को देते हैं, तो मानव मंत्रालय में किसी भी समय, अपने अवतरित अवस्था में, क्या उन्होंने कभी सीधे अपनी इच्छा से या अपने स्वयं के दिव्य स्वभाव पर कार्य किया था . वह जो कुछ भी करता है वही पिता उसे करने के लिए प्रेरित कर रहा है। तो, मेरे लिए यह बहुत सारी समस्याओं का समाधान करता है और यीशु को और अधिक एक इंसान बनाता है।

निःसंदेह, वह वही है। तो यदि यीशु केवल वही करता है जो पिता ने उसे एक ऐसे व्यक्ति के रूप में करने के लिए दिया था जो आरंभ में परमेश्वर के साथ था, तो यह उन लोगों को क्या कहता है जो यीशु का अनुसरण करते हैं? क्या हमें इस संबंध में भी उनका अनुसरण करना चाहिए, अपने जीवन को पिता की इच्छा के अनुसार ढालने का प्रयास करना चाहिए और केवल वही करने का प्रयास करना चाहिए जो पिता हमें करने के लिए दे रहे हैं? मुझे लगता है कि यहां विचार करने लायक कुछ है क्योंकि हम इन बयानों पर विचार करते हैं जो इस संदर्भ में धार्मिक नेताओं के साथ यीशु के लिए बड़ी समस्याएं पैदा करते हैं। हमने पहले देखा है कि यह जानकारी उन्हें उनके पिता के काम के बारे में बताती है और उनका अपना काम निर्णय के बारे में बताता है।

यह यहाँ अध्याय 5 में यीशु की ओर से एक बहुत ही दिलचस्प कदम है जहाँ वह अध्याय 5 श्लोक 24 में उनसे कहते हैं, जो कोई मेरा शब्द सुनता है और उस पर विश्वास करता है जिसने मुझे भेजा है, उसके पास अनन्त जीवन है और उस पर न्याय नहीं किया जाएगा, बल्कि वह मृत्यु से पार हो जाएगा। ज़िंदगी। मैं तुम से सच कहता हूँ, और यहां मुख्य वाक्यांश है, एक समय आ रहा है और अब है जब मरे हुए परमेश्वर के पुत्र की आवाज सुनेंगे, और जो सुनेंगे वे जीवित होंगे। तो, समय आ रहा है और अब है।

मृतक परमेश्वर के पुत्र की आवाज सुन रहे हैं। जैसे पिता अपने आप में जीवन रखता है, वैसे ही उसने पुत्र को भी अपने आप में जीवन रखने की अनुमति दी है। उसने उसे न्याय करने का अधिकार दिया है क्योंकि वह मनुष्य का पुत्र है।

इस पर आश्चर्यचकित मत होइए। पद 28 में वह कहता है, वह समय आ रहा है जब जितने लोग अपनी कब्रों में हैं, वे सब उसकी आवाज सुनेंगे और बाहर निकल आएंगे। जिन्होंने अच्छा किया है वे पुनर्जीवित हो उठेंगे।

जिन लोगों ने बुरा काम किया है वे निंदा के पात्र बनेंगे। तो, दूसरी बार ध्यान दें जब यीशु ने कहा कि एक समय आ रहा है, उन्होंने नहीं कहा और अब आ रहा है। इसलिए, हम श्लोक 28 की तुलना श्लोक 25 से करते हैं और इस अभिव्यक्ति पर ध्यान देते हैं, एक समय आ रहा है और अब आ रहा है।

इसलिए, यहाँ यीशु इस बात से इनकार नहीं कर रहे हैं कि भविष्य में न्याय होगा। वह पुष्टि कर रहा है कि भविष्य में निर्णय होगा, लेकिन वह कह रहा है कि निर्णय पहले ही शुरू हो चुका है। ईश्वर ने एक अर्थ में युगांतशास्त्र को वर्तमान में स्थानांतरित कर दिया है और जैसा कि यीशु अपनी पहचान के बारे में उपदेश देते हैं और सिखाते हैं कि ईश्वर उनके माध्यम से क्या कर रहा है, लोगों की उनके प्रति प्रतिक्रियाएँ एक अर्थ में अंतिम निर्णय की अग्रदूत हैं।

और जब यीशु लोगों को उस पर विश्वास करने पर जीवन प्रदान करते हैं और वे उस अर्थ में मृत्यु से बाहर आकर जीवन में आते हैं, एक ऐसा अर्थ जिसे हम जॉन अध्याय 3 में पहले ही कुछ स्थानों पर चर्चा करते हुए देख चुके हैं, कि जब लोग आ रहे हैं यीशु पर विश्वास करने के लिए, वे मृत्यु से बाहर आ रहे हैं और जीवन में आ रहे हैं। वे ऐसा जीवन छोड़ रहे हैं जो ईश्वर से अलगाव की जीवित मृत्यु है और जीवित ईश्वर के साथ संगति का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। और यीशु यहां श्लोक 24 और 25 में युगांतशास्त्रीय शब्दों में इसके बारे में बात कर रहे हैं और कह रहे हैं कि यह पहले से ही हो रहा है।

इसलिए, निर्णय कोई सुदूर भविष्य की बात नहीं है। भविष्य में जो हो रहा है उसे यहां नकारा नहीं जा रहा है, बल्कि भविष्य में जो हो रहा है उसे लोगों के लिए यीशु में विश्वास करने या वास्तव में यीशु को अस्वीकार करने के लिए एक मॉडल के रूप में उपयोग किया जाता है। क्योंकि यदि आप यीशु को अस्वीकार करते हैं, तो आप जॉन अध्याय 3 के शब्दों में पहले से ही निंदा कर चुके हैं। और हम यहां जॉन अध्याय 5 में जो पाते हैं वह इसकी पुष्टि कर रहा है।

इसलिए, धर्मशास्त्री, जब वे इस पर काबू पाने की कोशिश करते हैं और वर्णन करते हैं कि क्या हो रहा है, तो उनके पास इसके लिए कुछ भाषा होती है। हम अक्सर बाइबिल के पाठ सुनते हैं जो भविष्य के निर्णय की बात करते हैं जिन्हें भविष्य का युगांतशास्त्र कहा जाता है। कुछ धार्मिक समूह और संप्रदाय सख्ती से भविष्य की चीज़ के रूप में युगांतशास्त्र की ओर अधिक उन्मुख हैं।

अन्य लोग इसे साकार युगांत विज्ञान के संदर्भ में सोचते हैं, जिसका अर्थ है कि वे यह कहने में अधिक सहज हैं कि राज्य पहले ही यीशु में आ चुका है और भगवान ने अपनी भविष्य की शक्ति को प्रकट करना शुरू कर दिया है। तो शायद इसका वर्णन करने का सबसे अच्छा तरीका एक ऐसा शब्द है जिसे आप वहां बहुत सुनते हैं जिसे इनागर्ड एस्केटोलॉजी कहा जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि ईश्वर भविष्य में क्या करेगा, वह हमें वर्तमान में ही टुकड़ों-टुकड़ों में दिखा रहा है।

और ईश्वर ने पहले ही हमें मृत्यु से जीवन में बुला कर, अपने साथ संगति के जीवन में बुलाकर जो किया है, वह इस बात का संकेत है कि भविष्य में ईश्वर पूरी तरह से दुनिया के साथ क्या करेगा। तो, कुछ समय पहले जीई लैड द्वारा लिखी गई एक बहुत अच्छी किताब जिसे द प्रेजेंस ऑफ द फ्यूचर कहा जाता है, मुझे लगता है कि यह इसे बहुत अच्छी तरह से समझाती है, और जॉन में यहां क्या हो रहा है इसका शीर्षक भी बहुत अच्छा है। यीशु कह रहे हैं कि भविष्य पहले से ही इस अर्थ में मौजूद है कि लोगों की शाश्वत नियति उनके प्रति उनकी प्रतिक्रिया से निर्धारित हो रही है।

आप कहां जा रहे हैं, यह जानने के लिए आपको अंतिम निर्णय तक इंतजार करने की ज़रूरत नहीं है। यीशु कहते हैं कि यह पहले से ही मेरे प्रति आपकी प्रतिक्रिया से निर्धारित हो रहा है। यीशु ने पहले ही हमारे पिछले अध्याय में इस आशय के शब्द कहे थे जब उन्होंने सामरिया में महिला से बात की थी और कहा था कि समय आ रहा है और अब वह समय है जब पिता चाहते हैं कि लोग आत्मा और सच्चाई से उनकी पूजा करें।

बाद में, अध्याय 16 में भी, यीशु ऐसी भाषा का उपयोग करते हैं कि एक घंटा आने वाला है और यह नहीं कहते कि अभी वह भविष्य के बारे में बोल रहे हैं। तो, यह आने वाला समय और अब कुछ ऐसा है जिसके बारे में हमें सोचने की ज़रूरत है और हम इस सब के अंत में जॉन के युगांतशास्त्र पर एक व्याख्यान देने की योजना बना रहे हैं। जैसा कि हमने इसे सेट किया है, वह संख्या 21 या 22 हो सकती है।

हम देखेंगे कि यह कैसे होता है। हम इस विषय पर वापस आएं और इसे और अधिक पूर्ण रूप से विकसित करने का प्रयास करेंगे। जॉन अध्याय 5 में एक और बात जो काफी चौंकाने वाली है वह यह है कि कैसे यीशु को यह बोलने के लिए मजबूर किया जाता है कि उसके कितने गवाह हैं।

यह जानकारी श्लोक 31 से शुरू होती है और उसके बाद अध्याय में पहले धार्मिक नेताओं के साथ चल रही बहस के बारे में उनके विस्तारित निष्कर्ष की तरह है। जब वह कहता है कि यदि मैं अपने बारे में गवाही देता हूं तो मेरी गवाही सच नहीं है, यह काफी हद तक यह जानने की स्वीकृति है कि वे क्या सोच रहे थे क्योंकि वह अपने बारे में गवाही दे रहा था। वे शायद मन ही मन

सोच रहे हैं कि आप स्वयं की गवाही नहीं दे सकते , आपको इससे बेहतर गवाही की आवश्यकता है।

तो, वे उसके बारे में जो सोच रहे थे, उसे स्वीकार करके यीशु काफी हद तक उनके पैरों के नीचे से काट रहा है। तो, वह कहता है कि एक और है जो मेरे पक्ष में गवाही देता है और मुझे पता है कि मेरे बारे में उसकी गवाही सच है और वह स्पष्ट रूप से पद 32 से 35 तक जॉन बैपटिस्ट का उल्लेख कर रहा है। फिर वह कहता है कि मेरे पास जॉन की तुलना में भी अधिक महत्वपूर्ण गवाही है।

जो काम मेरे पिता ने मुझे पूरा करने को दिए हैं, ये काम जो मैं कर रहा हूँ वे मेरे विषय में गवाही देते हैं, गवाही देते हैं कि पिता मेरे साथ है। तो, वह उस घटना का उल्लेख कर रहा है जो अभी घटित हुई है, उसने अभी तालाब के पास इस लकवाग्रस्त व्यक्ति को ठीक किया है और यह वास्तव में ईश्वर का कार्य है जो यीशु कर रहा है। वह कहता है कि मैं जो कुछ भी करता हूँ वह मेरे माध्यम से पिता का कार्य है और ये कार्य मेरी गवाही देते हैं, पद 36।

तो, यीशु का तीसरा गवाह पिता का गवाह होगा। और अंत में, वह कहता है कि पिता ने स्वयं मेरे विषय में गवाही दी है। तू ने न तो उसका बोल देखा, न उसका शब्द सुना, न उसका रूप देखा, और न उसका वचन तुम्हारे मन में बसा है, क्योंकि जो उस ने भेजा उस पर तुम विश्वास नहीं करते।

तो, यीशु कह रहे हैं कि पिता मेरे माध्यम से गवाही देते हैं लेकिन आप उनकी गवाही पर ध्यान नहीं दे रहे हैं। अंत में, धर्मग्रंथों के माध्यम से मूसा की गवाही श्लोक 39 और उसके बाद में जोर देती है। तुम धर्मग्रन्थों का मन लगाकर अध्ययन करते हो क्योंकि तुम सोचते हो कि उनमें तुम्हें अनन्त जीवन मिलता है।

ये वही धर्मग्रन्थ हैं जो मेरे विषय में गवाही देते हैं। आपको बाइबल के कुछ अनुवाद मिल सकते हैं जो श्लोक 39 को एक अनिवार्यता के रूप में लेते हैं। यह ग्रीक व्याकरण का एक पहलू है जो अस्पष्ट है और इसका अनुवाद करना कठिन है और संदर्भ को इसे निर्धारित करना पड़ता है।

लेकिन हममें से जिन लोगों ने कभी-कभार कुछ ग्रीक भाषा देखी है, वे यह महसूस कर रहे हैं कि दूसरा व्यक्ति बहुवचन वर्तमान अनिवार्यता दूसरे व्यक्ति बहुवचन वर्तमान सूचक के समान सटीक रूप है। तो ऐसे अनुवाद हैं, मुझे लगता है कि राजा जेम्स पद 39 को एक आदेश के रूप में लेते हुए इसे इस तरह से करते हैं। धर्मग्रन्थों की खोज करो, धर्मग्रन्थों का मन लगाकर अध्ययन करो क्योंकि तुम सोचते हो कि उनमें तुम्हें अनन्त जीवन मिलेगा।

मेरे लिए यह स्वीकार करना बेहतर समझ में आता है कि यीशु को फरीसियों को धर्मग्रंथों का अध्ययन करने के लिए कहने की आवश्यकता नहीं थी। वे निश्चय ही धर्मग्रंथ के विद्यार्थी थे। यीशु यहाँ इसे स्वीकार कर रहे हैं और दुख की बात है कि आप धर्मग्रंथ के विद्यार्थी हैं, यह कहकर इसे उनके विरुद्ध कर रहे हैं।

आप धर्मग्रंथों का परिश्रमपूर्वक अध्ययन करते हैं क्योंकि आप सोचते हैं कि उनमें आपको अनन्त जीवन मिलता है और यीशु इस बात से सहमत होंगे कि धर्मग्रंथों में उनके पास अनन्त जीवन है। हालाँकि, उन्होंने शास्त्रों को गलत पढ़ा। वह कहता है, ये वही धर्मग्रन्थ हैं जो मेरे विषय में गवाही देते हैं।

तुम जीवन पाने के लिये मेरे पास आने से इन्कार करते हो। इसके बाद श्लोक 41 इसे ईश्वर की महिमा के बजाय मानवीय महिमा पाने की उनकी इच्छा के संदर्भ में थोड़ा और विकसित करता है। और अंत में, श्लोक 45 से 47 तक वह मूसा के इस विचार पर वापस आता है और कहता है कि तुम्हें पिता के सामने मुझ पर आरोप लगाने की भी आवश्यकता नहीं है।

तुम्हारा दोष लगाने वाला मूसा है जिस पर तुम्हारी आशाएँ टिकी हैं। यह कितनी विडम्बना है कि उन्होंने मूसा का अध्ययन किया क्योंकि उन्हें लगा कि वे अनन्त जीवन के बारे में अध्ययन कर रहे हैं और जितना अधिक उन्होंने मूसा का अध्ययन किया उतना ही अधिक वे स्पष्ट रूप से यीशु को याद कर रहे थे। यदि आप मूसा पर विश्वास करते हैं तो आप मुझ पर विश्वास करेंगे क्योंकि उसने मेरे बारे में लिखा है।

चूँकि तुम्हें उस पर विश्वास नहीं है जो उसने लिखा है तो तुम मेरी बात पर कैसे विश्वास करोगे? तो, यहाँ यीशु और धार्मिक नेताओं के बीच एक बुनियादी समस्या है। पुराने नियम, विशेष रूप से टोरा, के बारे में उनकी समझ ऐसी नहीं है जो यीशु की शिक्षा के प्रति संवेदनशील हो।

टोरा के बारे में उनकी समझ कई मायनों में उनकी समझ से बिल्कुल विपरीत है, खासकर उस मुद्दे के संदर्भ में जिसने सब्बाथ की समस्या को यहां उठाया है। इसलिए, हम उस अंतिम चीज़ की ओर मुड़ गए हैं जिसके बारे में हम इस बिंदु पर बात करना चाहते हैं जिस तरह से यीशु ने सब्बाथ के बारे में बात की थी। तो, अध्याय 5 का परिणाम यह होगा कि हम मूल रूप से इस अध्याय के बारे में उस व्यक्ति के रूप में इसके प्रभाव के बारे में कैसे सोचेंगे जो यीशु के अनुयायी बनना चाहते हैं।

सुसमाचार मार्क अध्याय 12 और ल्यूक अध्याय 6 में यीशु को सब्बाथ के प्रभु के रूप में वर्णित किया गया है। कहने का तात्पर्य यह है कि वह सब्त के दिन से भी बड़ा है क्योंकि उसी ने सब्त के दिन की स्थापना की है। जाहिर तौर पर यह देवता के लिए अप्रत्यक्ष रूप से निहित दावा है।

सब्त के दिन वे जो करना चाहते थे उसे करने का अधिकार परमेश्वर के अलावा और किसको होगा? यीशु ने मार्क अध्याय 2 श्लोक 27 के अनुसार यह भी सिखाया कि मनुष्य सब्बाथ की सेवा करने के लिए नहीं बनाए गए थे बल्कि सब्बाथ को मानवता की मदद करने के लिए बनाया गया था। मुझे लगता है कि यह हमें मूसा के पूरे टोरा के बारे में कुछ बताता है कि मूसा ने अपने लोगों के साथ भगवान की जो वाचा बांधी है, वह उनके जीवन को भगवान की इच्छा और भगवान के चरित्र के अनुरूप बनाकर उनके जीवन को बेहतर बनाने में सहायता करने के लिए है।

इसलिए जो लोग मूसा और कानून को सही ढंग से समझते हैं और धर्मशास्त्री जो आज इसे सही ढंग से समझते हैं, वे कानून के बारे में अपने आप में नकारात्मक बातें नहीं कह रहे होंगे। कानून एक अच्छी, उचित और पवित्र बात है जो पौलुस हमें रोमियों अध्याय 7 में बताता है। यह सब उस

बात से मेल खाता है जो यीशु सब्बाथ के बारे में कह रहे हैं, यह कुछ ऐसा नहीं है जो मनुष्यों की शैली को खराब करने के लिए बनाया गया था, बल्कि कुछ ऐसा है जो उन्हें दिया गया था उनको सहायता करने के लिए। इसलिए जब यीशु यहां बोल रहे हैं तो वह स्पष्ट रूप से इस दृष्टिकोण से सोच रहे हैं कि फरीसियों की धार्मिक परंपराएं गलत हैं और वे सब्त को मनुष्यों के लिए आशीर्वाद से अधिक बोझ बना रहे हैं।

पिता के अवतार के रूप में यीशु अपने कार्य करते हैं और अपने वचन बोलते हैं। वह ऐसे काम करता है जो केवल परमेश्वर ही कर सकता है। केवल परमेश्वर को सब्त के दिन कार्य करने का अधिकार है और परमेश्वर ऐसा विभिन्न तरीकों से करता है और इसलिए यीशु सब्त के दिन का प्रभु है।

वह वह है जो फरीसियों की तरह इसकी व्याख्या कर सकता है। इसलिए जैसे ही हम निष्कर्ष निकालते हैं हम सोचना शुरू करते हैं, मैं इस पाठ की ताकत के रूप में अनुमान लगाता हूं कि शायद अध्याय 5 का केंद्रीय भाग इन शब्दों में कहा गया है। जो पुत्र का आदर नहीं करता, वह पिता का आदर नहीं करता।

जब तक हम प्रभु यीशु मसीह का सम्मान नहीं करते तब तक हम वास्तव में भगवान का उचित सम्मान नहीं कर सकते। दिलचस्प बात यह है कि प्रकाशितवाक्य अध्याय 4 और 5 में हमारे पास देवदूत प्राणियों की एक तस्वीर है जो अध्याय 4 में सिंहासन पर बैठे व्यक्ति की पूजा कर रहे हैं। प्रकाशितवाक्य के अध्याय 5 में, मनुष्य के पुत्र का परिचय दिया गया है। यीशु को वहाँ मेमे के रूप में पेश किया गया है और जब तक प्रकाशितवाक्य अध्याय 5 में स्तुति समाप्त हो जाती है, वही स्तुति जो अध्याय 4 में सिंहासन पर बैठे व्यक्ति को दी गई है, अब मेमे पर भी लागू होने लगती है।

इसलिए, अध्याय 5 में सारी सृष्टि को सिंहासन पर बैठे व्यक्ति और मेमे की समान शब्दों में प्रशंसा करते हुए चित्रित किया गया है, जो यीशु के देवता का एक अधिक शक्तिशाली प्रमाण प्रतीत होता है और इस तथ्य को दर्शाता है कि वह पिता का आधिकारिक एजेंट है। बिल्कुल वही जो यीशु यहाँ पढ़ा रहे थे, शायद हमें जॉन के सुसमाचार के धर्मशास्त्र और सर्वनाश के धर्मशास्त्र के बीच कुछ समानता दिखा रहे थे।

यह डॉ. डेविड टर्नर और जॉन के सुसमाचार पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 7 है, विवाद, यीशु की यरूशलेम की दूसरी यात्रा। यूहन्ना 5:1-47.